[इस प्रश्न पत्र के 02 मुद्रित पृष्ठ हैं]

रोल नंबर _____

सिविल जज (मुख्य) परीक्षा-II, 2019

हिंदी

निर्धारित समय: 3घन्टे अधिकतम अंक: 100

नोट:

1. इस प्रश्न पत्र में कुल नौ प्रश्न हैं तथा सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
2. साफ़ लिखें।
3. उत्तरपुस्तिका के पुनर्मूल्यांकन / पुन: जाँच की अनुमति नहीं है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार दीजिए:

1. निम्नलिखित का कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: (04)

   (क) भूखा हूँ, कुछ खाने को दो। (सर्वनाम बताइए)

   (ख) मैं अगले महीने दिल्ली घूमने आऊँगा। (कर्मवाच्य में बदलिए)

   (ग) वह पुस्तक लेकर विद्यालय चला गया। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

   (घ) परिश्रम करने पर मैं सफल हो जाता। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

2. निम्नलिखित लोकोक्तियों और मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए: (04)

   (क) आग-बबूला होना

   (ख) थोथा चना बाजे घना

   (ग) लिफाफा देखकर मजमून भांप लेना

   (घ) हर दिल अजीज़ होना

3. निम्नलिखित अनेकार्थी शब्दों को ऐसे वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए जिनसे उनके अलग अलग अर्थ स्पष्ट हों। (02)

   (क) फल (ख) संस्कृत (ग) कनक (घ) हरा

4. निम्नलिखित सामासिक पदों का विग्रह करके समास का नाम लिखिए: (02)

   (क) पददलित (ख) राजा-रंक (ग) सुमुखी (घ) षट्कोण

5. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए: (02)

   (क) निदाघ (ख) अपर्णा (ग) अभूतपूर्व (घ) जलजात

6. निम्नलिखित शब्दों के तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए: (02)

   (क) बादल (ख) मार्ग (ग) आँख (घ) फूल

7. निम्नलिखित गद्यांश में कुछ व्याकरणिक त्रुटियाँ हैं, इन त्रुटियों को शुद्ध करके लिखिए: (04)

समय निकल जाता है और बातें रह जाता है। हमारा प्रायः सभी भाषाएँ किसी न किसी एक राष्ट्रियता का शासन-तंत्र में बँध कर उसका भाषा के प्रभाव या आतंक में रहा। हजारों वर्ष पहले देववाणी संस्कृत ने ऊपर से नीचे तक, चारों खूँट भारत में अपना दिग्विजय का झंडा गाड़ा था। बारहवीं तेरहवीं शताब्दी से हमने देखी कि हर भाषा अपने क्षेत्रीय जन की आध्यातमीक और संसकृतिक भुख को शांत करने में समर्थ होकर संस्कृत भाषा के अंकुश से उबरने लगी।

8. निम्नलिखित अंग्रज़ी गद्यांश का हिन्दी अनुवाद कीजिए: (30)

Amongst my few friends at the high school I had, at different times, two who might be called intimate. One of these friendships did not last long, though I never forsook my friend. He forsook me, because I made friends with the other. This latter friendship I regard as a tragedy in my life. It lasted long. I formed it in spirit of a reformer. This companion was originally my elder brother's friend. They were classmates. I knew his weaknesses, but I regarded him as a faithful friend. My mother, my eldest brother, and my wife warned me that I was in bad company. I was too proud to heed my wife's warning. But I dared not go against the opinion of my mother and my eldest brother. Nevertheless I pleaded with them saying, 'I know he has the weaknesses you attribute to him, but you do not know his virtues. He cannot lead me astray, as my association with him is meant to reform him. For I am sure that if he reforms his ways, he will be a splendid man. I beg you not to be anxious on my account.' I do not think this satisfied them, but they accepted my explanation and let me go my way. I have seen since that I had calculated wrongly. A reformer cannot afford to have close intimacy with him whom he seeks to reform. True friendship is an identity of souls rarely to be found in this world. Only between like natures can friendship be altogether worthy and enduring. Friends react on one another. Hence in friendship there is very little scope for reform. I am of opinion that all exclusive intimacies are to be avoided; for man takes in vice far more readily than virtue. And he who would be friends with God must remain alone, or make the whole world his friend. I may be wrong, but my effort to cultivate an intimate friendship proved a failure.

9. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 800 शब्दों तक का निंबंध लिखिए: (50)

(क) मनुष्य और समाज
(ख) स्वास्थ्य ही परम धन है
(ग) भारतीय किसान

*****